दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

पत्रांक : /2018–19 दिनांक : 18.09.2018

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

आज दिनांक 18 सितम्बर 2018 को दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय में युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला के चौथे दिन समाजशास्त्र विभाग द्वारा प्रायोजित 'समाज और संस्कृति की समाजशात्रीय व्याख्या' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो. विनोद कुमार श्रीवास्तव, पूर्व विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने समाज को पारिभाषित करते हुए कहा कि यह एक व्यापक एवं बहुआयामी संस्था है, जिसे कुछ समाजशास्त्रियों ने यह माना है कि हम मानव जिस समाज में रहते हैं, वह ईश्वर की रचना है, हाला की समाज की व्याख्या मार्क्सवादी तथा गैर मार्क्सवादी दोनों दृष्टिकोण से की गई है। लेकिन प्रायः समाजशास्त्र के सभी अध्येता एक मत से सहमत हैं कि समाज ईश्वर की कृति नहीं क्योंकि जिस वर्तमान समाज में रहते हैं उसमें निरन्तर सम्बन्धों में परिवर्तन दिखाई देता है। अतः इसी के सापेक्ष समाज का अस्तित्व कायम रहता है। परिवर्तन ही समाज का शाश्वत स्वरूप होता है। विचारकों का यह भी मानना है कि पश्चिमी पूंजीवाद तथा खुली बाजार व्यवस्था मानव के विकास का अंतिम चरण है। जो परिवर्तनशीलता का सूचक है। अतः इसी परिवर्तन को ही आधार मानकर समाज को पारिभाषित किया जा सकता है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री मेकाइवर और पेज ने कहा है कि समाज, सामाजिक सम्बन्धों का एक ऐसा जाल है, जो निरंतर परिवर्तन की अवस्था से गुजर रहा है। अतः सही अर्थो में समाज परिणाम नहीं बल्कि परिवर्तन की प्रक्रिया है।

संस्कृति के विषय में इनका मत था की सामाजिक सम्बन्धों का सतत क्रियान्वयन का आधार संस्कृति होती है। लेकिन यह भी समाज के समान ही परिवर्तनशील है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री राबर्ट बेस्टीड, ने अपनी रचना द सोशल

आर्डर में कहा कि एक समाज के सदस्य के रूप में हम सभी चीजों के बारे में सोचते हैं, करते हैं तथा उसे भविष्य में सक्रिय रखने के लिए प्रयासरत रहते हैं, इसी के द्वारा निर्मित होने वाली जटिल समस्याओं का समाधान धर्म, कला, साहित्य, आचार–विचार में ढूढने का प्रयास करते हैं। लेकिन इसके लिए समाजशास्त्र में प्रतिमान व्यवहार को नियमित और नियंत्रित करने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसे सामाजिक परम्परायें और लोकाचार स्वतः संचालित होने लगते हैं, सही अर्थो में देखा जाय जो समाज, संस्कृति में ही प्रतिबिम्बित होता है तथा संस्कृति ही समाज की अमूल्य धरोहर होती है। संस्कृति के बिना समाज का अस्तित्व संभव नहीं हो सकता। क्योंकि समाज और संस्कृति एक ऐसी प्रवाहमय संस्था है, जो एक दूसरे की पूरक है और किसी एक के शिथिल होने पर दूसरे के अस्तित्व को समझना संभव नहीं है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि समाज का अस्तित्व तभी कायम रह सकता है, जब संस्कृति में जीवन्तता तथा समरसता का भाव कायम रहे। क्योंकि निर्जीव संस्कृति से हम सजीव समाज की कल्पना नहीं कर सकते।

कार्यक्रम का संचालन तथा विषय प्रवर्तन समाजशास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ. रामलाल गाडिया ने किया तथा आभार ज्ञापन व्याख्यानमाला की संयोजिका डॉ. अर्चना सिंह ने किया। डॉ. श्रीभगवान सिंह, डॉ. वीणा गोपाल मिश्रा, डॉ. धीरेन्द्र सिंह, डॉ. सुनील सिंह, डॉ. अखण्ड प्रताप सिंह, डॉ. सरिता सिंह, डॉ. वीभा पाण्डेय एवं छात्र–छात्रायें उपस्थित थे।

पॉचवे दिवस का कार्यक्रम– दिनांक – 19.09.2018, समय – अपराह्न 01.00 बजे।
विषय– **पृथ्वी ग्रह की वनस्पतियॉ**
मुख्य अतिथि - प्रो. वशिष्ठ नारायण पाण्डेय, अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
कार्यक्रम स्थल – संवाद कक्ष (दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर)।

डॉ.(मुरली मनोहर तिवारी)
सूचना एवं जनसम्पर्क प्रभारी

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति
व्याख्यान-माला

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति
व्याख्यान-माला
कार्यक्रम स्थल : संवाद कक्ष (पूर्वी परिसर)
दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर

व्याख्यान-माला

व्याख्यान-माला